THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

परमेश्वर आपको सजा नहीं देता

दिव्य प्रेम* कभी प्रेम करना बंद नहीं करता

God doesn't punish you

Divine love never stops loving.

Author – Nathan A. Talbot

Christian Science Sentinel Vol. 101, No. 33, August 16, 1999

एक सुखद घर में से शीतल सर्द हवा में बाहर कदम रखो। उसका प्रभाव महसूस किया जा सकता है। अब आप सूर्य की गर्म किरणों में खड़े हो जाओ और आप असल में आराम महसूस कर सकते हो। परन्तु छाया में चले जाओ और कँपकंपी से बचना मुश्किल होगा। आप यह नहीं सोचोगे कि सूर्य आपको छाया में कदम रखने के लिए सजा दे रहा है। सूर्य तो केवल चमकता है। यह तो अभी भी आप को गर्मी देने के लिए वहीं है।

कुछ लोग सोचते है कि परमेश्वर नाराज़ हो जाता है और उनको सजा देता है, जो उससे मुँह मोड़ लेते हैं परन्तु वह परमेश्वर का स्वभाव नहीं है। वह एक क्रुद्ध, श्रेष्ठ व्यक्ति नहीं है, जिसका अभिप्राय हानि पहुँचाना हो, इसके बजाए, सूर्य की भाँति, वह हमेशा चकमता रहता है। ठीक वहीं पर हमें आशीष देने के लिए यद्यपि हम अपने आपको उसकी कान्तिमय अपस्थिति से परे जाते हुए सोचते हैं।

ऐसा भ्रमण अन्त में असुविधाजनक होगा। शीघ्र ही या बाद में हम ठंड को महसूस करेंगें। एक तरह से हम अपने आप को सजा दे रहे हैं और वह कोई बहुत समझदारी वाला कदम नहीं है। अपनी प्रार्थनाओं और अपनी जिन्दगियों में परमेश्वर के करीब रहने में, जीसस के पहाड़ी उपदेश और दस आज्ञाओं में दिए गए संरक्षक नैतिक नियमों को मान्यता देने में बहुत समझदारी है। उनके स्नेह भरे आलिंगन में रहने में सही तर्क है। वे एक सौम्य दिव्य कानून को प्रस्तुत करते हैं, जो कि हमारी कुशलता और विकास का पोषण करता है।

मेरी बेकर एडी अकसर अपनी रचनाओं में सज़ा का वर्णन करने के लिए एक रूढ़िवादी मार्ग का इस्तेमाल करती है–कैसे इंसानी मन इसे दिव्य प्रतिफल की तरह देखता है। परन्तु अपनी रचनाओं में शुरू से अन्त तक वह हमारा मार्गदर्शन इंसानी मन की सीमित दृष्टि से परे एक स्पष्ट बोध तक करती रहती हैं कि परमेश्वर ही अनन्त प्रेम है। उदाहरणतः वह देखती है, "महान तथ्य कि परमेश्वर प्रेम से सभी का संचालन करता है, पाप के सिवाए किसी को भी सज़ा न देते हुए, यही आपका दृष्टिकोण है, जहाँ से आगे बढ़ा जा सकता है और बीमारी के भय को नष्ट किया जा सकता है"। (सायँस एण्ड हैल्थ पृष्ठ 412)

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2010 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

एक तरह से, हम कह सकते हैं कि परमेश्वर की सम्पूर्णता हमें सज़ा महसूस करने के लिए छोड़ देती है, जब हम उस सम्पूर्णता को ठुकरा देते हैं–जब हम पाप करते हैं। तथापि परमेश्वर का प्रेम हमारे लिये उसके बच्चे की भाँति अपरिवर्तनशील और शाश्वत है। आखिरकार हम दिव्य प्रेम से वंचित नहीं रह सकते जो कि हमें अपने साथ समन्वय की ओर आकर्षित करता है। जैसे ही हम पापमय विचारों ओर उन कार्यों को जो कि असुविधाजनक हैं, त्याग देते हैं, ''सज़ा'' की अनुभूति या अलगाव हमेशा आलोप हो जाता है। जो भी परमेश्वर के विपरीत है वह निस्संदेह असुखदायी है।

एक शताब्दी पहले यह विश्वास करना सामान्य बात थी कि वह परमेश्वर ही था जो तकलीफें देता था। संभवतः यह आज कम सामान्य बात है। ज्यादातर लोग आज कल इस मत को नहीं मानते कि आकाश में एक कठोर व्यक्ति गलतिया ढूँढ रहा है। अब लोगों के लिए यह सोचना अस्वाभाविक नहीं है कि परमेश्वर एक सम्पूर्णतः प्रेम करने वाला परमेश्वर है। यहाँ तक कि प्रेम स्वयं सर्वव्याप्त है। असल में, एक परमेश्वर जो कि इतना ध्यान रखता है कि वह अपने बच्चों के लिए शुद्ध आध्यात्मिकता, दिव्य समन्वय बनाए रखता ह। प्रतिशोध के बिल्कुल विपरीत।

आपका इसके बारे में क्या विचार है? क्या आप ऐसे परमेश्वर में विश्वास रखते हो जो कि सज़ा देता है? संभवतः पारंपरिक तरीके से नहीं। परन्तु एक खास तरीके से, हममें से ज्यादातर अब भी एक ऐसे परमेश्वर की सोच मन में रखते हैं जो सज़ा देता है।

आखिरकार परमेश्वर है क्या? उसका स्वभाव शक्ति, उपस्थिति, सत्य से संबधित है। बाइबल ऐसे लोगों की उदाहरणों से भरी पड़ी है जिन्होंने परमेश्वर की उपस्थिति को महसूस किया, उसकी शक्ति के प्रमाण को देखा, उनको आन्तरिक आश्वासन था कि वह वास्तविक था। परन्तु क्या लोग नहीं सोचते कि बहुत सी वस्तुओं में शक्ति, उपस्थिति, सत्य है? वे सोचते हैं कि आनुवांशिक बीमारी असली है कि यह उनके जीवन में मौजूद है, कि इसका उनके ऊपर नियंत्रण है। इसी तरह एक दुर्घटना के हानिकारक प्रभावों, बुढापे के साथ सामान्य तौर पर जुड़ी हुई क्षीणता या सोच की व्याकुल स्थितियाँ जैसे कि नाराजगी, डर, ईर्ष्या के बारे में विश्वास करना बहुत आसान है।

हाँ, बहुत सारे '' परमेश्वर'' प्रतीत हाते हैं। दूसरे शब्दों में, बहुत सारे हालात ऐसे होते है जो कि हमें परमेश्वर की तरह प्रतीत हो सकते है, जो कि हमारे ऊपर नियंत्रण करते दिखाई देते है, एक अनिवार्य उपस्थिति, एक स्वभाविक वास्तविकता की तरह और यह हालात सज़ा सहसूस करने का कारण बनते है। परन्तु यह झूठे परमेश्वर हैं उनमें विश्वसनीय वास्तविकता, शक्ति और परमेश्वर की उपस्थिति नही है, जिसको क्राईस्ट जीसस ने प्रेम किया था या मोज़िज़ ने जिसकी आराधना की थी–पहली आज्ञा का परमेश्वर, जिसने घोषित किया था, ''तुम मेरे सिवाए किसी और को परमेश्वर नहीं मानोगे''।

इस तथ्य में, कि वास्तविक परमेश्वर हमें कभी सज़ा नहीं देता, एक अदभुत परन्तु एक गंभीर सत्य और सरलता है। वह प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनन्त अच्छाई, सम्पूर्ण प्रेम, सभी को गले लगाने वाला और सभी को बनाए रखने वाला माता पिता है। वह अपने प्रत्येक बच्चे के लिए प्रज्ञावान प्रेम की पतिभा से चमकता रहता है।

Translation © 2010 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

यदि हम अपने जीवन में असुविधा अनुभव कर रहे हैं, तो उसका समाधान है। कोई भी समस्या इस समाधान से परे नहीं। यह अपनी सोच को और अपनी जिन्दगियों को परिपूर्ण रूप से सच्चे परमेश्वर के साथ सीधा जोड़ना है। इस प्रयत्न का एक भाग इस बात की पूर्ण खोज को सम्मिलित करता है कि यह परमेश्वर सज़ा देने वाला परमेश्वर नहीं है। प्रार्थना के माध्यम से हम इस सत्य की रोशनी में और आगे बढ़ सकते हैं और इस मत को त्याग देते हैं कि परमेश्वर सज़ा देता है। यह किसी झूठे परमेश्वर, किसी बनावटी उपस्थिति या शक्ति, संयोग या दुर्घटना, बीमारी या पाप, बुढ़ापा या डर कहलाए जाने वाले किसी परमेश्वर के मत को छोड़ देने की इच्छा को सम्मिलित करता है। हमें परमेश्वर के साथ मिलाप से परे जाने की जरूरत नहीं । न ही हमें कभी किसी व्यक्ति या किसी वस्तु को अनुमति देने की जरूरत है जो हमें परमेश्वर के साथ समन्वित रहने के हमारे आध्यात्मिक अधिकार से वंचित कर सके।

यह एतिहासिक, धार्मिक धारणा कि परमेश्वर सज़ा देता है, सदा से गलत थी। वह ऐसा काभी नहीं करता। जो कुछ भी लोगों ने महसूस किया है वह झूठे ईश्वरों का, इस भयंकर भ्रान्ति का सजा देने वाला प्रभाव है कि परमेश्वर की अनन्त अच्छाई के विपरीत एक शक्ति है, उसकी शुद्धता और प्रेम के विपरीत उपस्थिति है, उसके सम्पूर्ण बच्चों के विपरीत एक वास्तविकता है।

इन परछाइयों से बाहर चलना शुरू करो जो कि असल में पुरातन रूढ़िवादी भ्राँति है, जो आग्रह करती है कि परमेश्वर आपको सज़ा दे रहा है। सत्य की सुखद रोशनी महसूस करो जो यह प्रकट करती है कि परमेश्वर आपको प्रेम करता है। जैसे ही तुम्हारी सोच ऐसी किसी शक्ति या परमेश्वर जो सज़ा देता है उसको मानने की बजाए एक सर्वशक्मिान परमेश्वर जो प्रेम करता है, उसकी कृतज्ञता की ओर बदलना शुरू कर देती हैं, तुम्हे तुम्हारा जीवन बदलता हुअ दिखाई देगा। तुम्हें उपचार मिलेगा।

Translation © 2009 The Christian Science Publishing Society. This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.